

Q. - कान्तराष्ट्रीय संबंधों में मार्क्सवादी अवधारणा -

Ans. - कान्तराष्ट्रीय राजनीति का मार्क्सवादी उपागम पश्चिम की आक्रामकता पर बल देता है। यह यथार्थवादी तथा उदारवादी सिद्धान्त के विपरीत तथा स्थिति का समर्थक नहीं है। मार्क्सवादी कान्तराष्ट्रीय राजनीति को संपूर्ण विश्व के स्तर पर वर्ग संघर्ष के प्रतिरूप में देखते हैं। इसमें पूँजीवादी दुर्ग गरीब देशों का शोषण करते हैं और बड़े प्रचुर से राष्ट्रीय हित के संवर्द्धन के लिए युद्ध तथा विस्तारवादी नीति को अपनाते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए दुनिया के सभी मजदूर जिन्हा छोड़े उद्देश्य नहीं होता है और वह केवल अपने वर्ग से संबन्धित होते हैं - अतः ही और पूँजीवाद हमसे संबंधित सभी समस्याओं को समाप्त कर इसका उद्देश्य पूँजीवाद का अंत और अंतिम रूप से कान्तराष्ट्रीय स्तर पर साम्यवाद की स्थापना करना है। वास्तव में वर्गों में मार्क्सवादी क्रांति के बाद इस विचारधारा की लोकप्रियता बढ़ी और इससे कान्तराष्ट्रीय राजनीति को भी प्रभावित किया। इस प्रकार हम पाते हैं कि कान्तराष्ट्रीय व्यवस्था में पूँजीवाद की स्थिति की समीक्षा मार्क्स के सच्चे अनुयायी लेनिन ने अपनी पुस्तक *Imperialism highest stage of Capitalism* में की।

कान्तराष्ट्रीय राजनीति के प्रति मार्क्सवादी विचार इसके राष्ट्रीय राजनीति की विचार से ही निकला है। जिस प्रकार पूँजीक राज्य के अंदर अमीर और गरीब दो वर्ग होते हैं और उनके संबंध चला रहता है उसी प्रकार कान्तराष्ट्रीय राजनीति में पूँजीवादी राज्यों तथा पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा शोषित गरीब और पिछड़े हुए राज्यों में संबंध चला रहता है। कान्तराष्ट्रीय राजनीति में विस्तारवाद तथा युद्ध द्वारा अमीर वर्ग गरीब राज्यों का शोषण करते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार दुनिया में समाजवाद की स्थापना के बाद शोषण का अंत होगा। कान्तराष्ट्रीय राजनीति की परिप्रेक्ष्य में जब मार्क्सवादी सिद्धान्त पर विचार किया

जाता है तो चार कंठ संबंधित आवधारणाओं पर जोर दिया जाता है।

प्रथम — कान्तर्बोद्धीय राजनीति में मार्क्सवादी सिद्धांत सर्वसंग्रह अंतर्बोद्धीयवाद पर आधारित है जो विश्व स्तर पर मजदूरों के एक होने की बात करता है। ये पूँजीवाद बाधवाद का विरोध करने और कान्तर्बोद्धीय समाजवाद की स्थापना पर जोर देता है।

द्वितीय — मार्क्सवादी राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत का समर्थन करते हैं। इसके अनुसार उपनिवेशवाद समाप्त होना चाहिए और दुनिया के सभी देशों को अपनी राजनीति व्यवस्था निर्धारित करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

तीसरे — मार्क्सवादी आंतरिपूर्ण सह-आत्मिक पर जोर देता है। उनके अनुसार सभी राष्ट्रीयों को किसी देश की सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था की आलोचना किए बिना आंतरिपूर्ण ढंग से देखा चाहिए।

चौथे — समाजवाद संबंधी मार्क्सवादी सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि पूँजीक राजनीतिक व्यवस्था आर्थिक तत्वों का आईना मात्र है जो कि कालव में मार्क्सवादी विचारधारा के आधार है। समाजवाद रूपी राजनीतिक व्यवस्था इस आर्थिक व्यवस्था की कृपण है जिसे पूँजीवाद कहते हैं। मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार पूँजीवादी समाज अपनी परिधि के भीतर अपनी उपज के अनुपात में व्यापार का पर्याप्त क्षेत्र प्राप्त नहीं कर पाता। इस कारण उनमें अन्य और ~~प्रकृति~~ पूँजीवादी तथा पूँजीवादी क्षेत्रों में दाहना की प्रवृत्ति बढती है।

पाश्चिमी देशों के कान्तर्बोद्धीय राजनीति के विद्वान लगातार इस बात को कहते हैं कि मार्क्सवादी सिद्धांत में ऐसा कुछ नहीं है कि इसे कान्तर्बोद्धीय राजनीति के संघट्ट किया जा सके। कान्तर्बोद्धीय राजनीति मार्क्स का

कोई बोलबाला नहीं है। मार्क्स का ध्यान पूँजीवाद से राष्ट्रीय पूँजी की संरचना के अध्ययन पर केन्द्रित था। परंतु यह कहना गलत होगा कि मार्क्स ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर विचार नहीं किया। मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद न केवल अपने माल का बालूक पूँजी का भी अन्तर्देशों में निर्यात करने लगता है। इसके तीन बड़े परिणाम होते हैं।

(1) साम्राज्यवाद का विकास

पूँजीवादी अपने देश के बाहर जिन देशों में पूँजीवादी लगाने हैं वह देश हमेशा उनके अधीन रहे और साम्राज्यवाद का अंग बना रहे ताकि वे उपनिवेशवासियों का शोषण करके अधिकतम लाभ उठा सकें। इसके परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद से युद्ध पैदा होगा। दूसरे देशों में पूँजी लगाने से पूँजीवादी देशों में साम्राज्यवाद और उपनिवेश पाने के लिए जबरदस्त होड़ शुरू हो जाती है। इस होड़ के कारण विभिन्न देशों में गुटवाजियों होने लगती हैं। विभिन्न देश अपने माल के लिए मंडिया सुरक्षित रखने के लिए और उपनिवेश बनाए रखने के लिए युद्ध का सहारा लेते हैं।

(ii) दूसरा परिणाम पूँजीवादी व्यवस्था की समाप्ति तथा साम्यवादी क्रांति के लिए मार्ग प्रशस्त करना है क्योंकि इस प्रकार युद्ध एक महान अंतर विरोध का जन्म देते हैं। पूँजीवाद अपने स्वार्थ के लिए लंड जानेवाले इन युद्धों में मजदूरों को काम के बालूक पूँजी का बालूक पूँजी करना चाहते हैं। जब मजदूर इस बात को समझ जाते हैं कि इससे अन्तः विदेशी नहीं वरन् अपने देश के पूँजीवाद के ही वे उनके विरुद्ध विद्रोह करते हैं और पूँजीवाद की समाप्ति कर साम्यवाद की स्थापना करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय संबंध के मार्क्सवादी विचार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पूँजीवाद के नाश तथा आत्म-निर्णय

और आतिथी बहन आतिथ्य तथा साम्राज्यवाद के
विरोध की आवश्यकता पर आधारित है।

जिस का तात्पर्य है कि हमें अपने देश के अर्थोपार्जन के लिए
आंतराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना चाहिए।
हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।

आइए इसे समझें (1)

हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।
हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।
हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।

आइए इसे समझें (2)

हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।
हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।
हमारे देश में अनेक संसाधन हैं जो विदेशों को आकर्षित कर सकते हैं।
हमें इन संसाधनों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें बेचना चाहिए।
इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि आएगी।